Theme Song for -

असंभव संभव : एक प्राणिक क्रांति

(108 दिन की ब्रेदेरियन भट्टी)

Asambhav Sambhav : Ek Pranic Kranti

(Hindi Series starting from 13 Nov 2022 By BK Dr Sachin Bhai)

Singer : BK Deepa

Lyrics : Dr Sachin Bhai

नया संदेश ले फिर से
नई ज्योति जगे फिर से

उठो तपस्वियों जागो
नया लक्ष्य साधने का समय फिर आ रहा हैं
की तपस्या का परम श्रृंगार करने का समय फिर आ रहा हैं

चलो, अब इक नई मशाल की ज्वाला फैले

अज्ञान के घनघोर अंधकार में फिर
की मधुर रागिनी का साज़ भर दे

सन्नाटो से भरी वीरानीयों में फिर

भटकती आत्मज्योति, निशा के बाद हरदम ही सूरज आता रहा हैं,
यह जीवन की गति रही है
मैले पंक में ही पंकज खिलते रहे है,

असंभव होने पर भी हृदय में संभव की आशाएं जीत की हरदम जलती रही है

असंभव आज का सच है
संभव तो होना है फिर भी

उठो वैरागिओ !
नवक्रांति का सूत्रपात करने का समय फिर आ रा है

की साधना की कठोर झंकार करने का समय फिर आ रहा हैं

नया संदेश ले फिर से
नई ज्योति जगे फिर से

उठो तपस्वियों जागो
नया लक्ष्य साधने का समय फिर आ रहा हैं
की तपस्या का परम श्रृंगार करने का समय फिर आ रहा हैं

प्राणों में क्रांति हैं फिर से
मन में जोश हैं फिर से

उड़ो ओ पंछियो
उन्मुक्त गगन में उड़ान भरने का समय फिर आ रहा हैं
की सलाखों को काटने का समय फिर आ रहा हैं

न अपना प्रण असंभ है
न ये लक्ष्य असाध्य है

उठो ओ योगियों,
राजयोग के नये संस्करण रचने का समय फिर आ रहा हैं
की प्राणों में नव चेतना भरने का समय फिर आ रहा हैं

सुनो अनुभव ये कहता हैं,
निराशा की गार से ही आशाओं के दीप जलते है,
नया सवेरा आता है,

असंभव आज लगता है,
चेतना मुक्त होगी एक दिन निश्चित,
ये शिव का ज्ञान कहता है,

आये है आज शिव साजन
महामिलन की है ये वेला

उठो ओ परवानों,
की शिव शमा पर मिटने का समय फिर आ रहा हैं
की अंतस में प्रेमरस स्पंदित करने का समय फिर आ रहा हैं

नया संदेश ले फिर से
नई ज्योति जगे फिर से

उठो तपस्वियों जागो
नया लक्ष्य साधने का समय फिर आ रहा हैं
की तपस्या का परम श्रृंगार करने का समय फिर आ रहा हैं